आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:02-01-15

हम भाग्यशाली आत्माओं को ईश्वरीय ज्ञान देकर और याद की यात्रा सिखलाकर हमें कर्मातित बनाने वाले, बेहद के बाप ने कहा, मीठे बच्चे - तुम्हारी जब कर्मातित अवस्था होगी तब विष्णुपुरी में जायेंगे, पास विद ऑनर होने वाले बच्चे ही कर्मातित बनते हैं.

बाबा हमें इस समय ईश्वरीय ज्ञान देते है जिसे हम आत्मा ये ईश्वरीय श्रीमत् पर चल-कर कोई भी नये कर्मबंन्धन में न फंसे. फिर योग से हम आत्मा ये हमारे लास्ट ६३ जन्मो के विकारी कर्मों के कारण जमा हुए पापों को भस्म करते है, आत्मा में दिव्य-गुणों और शक्तिओं को भरते है जिसे आत्मा के संस्कार दैवी-देवता जैसे बन जाते हैं. जब हमारी आत्मा सर्व कर्मबंन्धनों से मुक्त होकर, एक बाप की याद में लगन-मगन अवस्था में चली जाती है तो आत्मा इस पुराने शरीर को अपनी इच्छा से त्याग कर बाबा के पास परमधाम चली जाती हैं जिसे ही कर्मातित अवस्था कहा जाता हैं.

आज की बाबा की ज्ञान मुरली से कुछ ऐसे महा-वाक्यों को निकालकर, आत्मिक अवस्था में रहकर बाप की याद में पढ़ेंगे.

- बाबा ने कहा, यह भी तुम बच्चों की बुद्धि में है कि हम आत्मा ये बेहद के बाप के बने हैं जिससे अतीन्दिय सुख मिलता है ऐसे बाप को भूलना नहीं है. एक बाप की याद से ही तुम्हारे जन्म-जन्मांतर के पाप दग्ध होते हैं. अभी तुम्हारे मन में है की ऐसे बाप को तो अच्छी रीति याद करने का पुरुषार्थ करना चाहिए.

- बाबा ने कहा, जैसे सगाई होती है तो एक-दो को याद करते रहते हैं. अभी तुम्हारी भी सगाई हुई है शिवबाबा से. फिर जब शिवबाबा की याद से तुम कर्मातित अवस्था को पाते हो तब तुम विष्णुपुरी में चले जायेंगे.

- बाबा ने कहा, जब तक तुम्हारी आत्मा पवित्र न बने तब तक सतयुग में जा न सके इसलिए बाप संगम पर ही आते हैं, इसको ही पुरुषोत्तम कल्याणकारी युग कहा जाता है. जबकि तुम कौड़ी से हीर जैसा बनते हो इसलिए श्रीमत् पर चलते रहो. श्री श्री शिवबाबा को ही कहा जाता है.

- बाबा ने कहा, अज्ञान-काल में ६३ जन्मो से तुम बाप को ही याद करते आये हो. तुम अब आशिक हो एक माशूक के. सब भक्त हैं एक भगवान के. पतियों का पति, बापों का बाप भी

वह एक ही है. तुम बच्चों को राजाओं का राजा बनाते हैं. वही बाप तुम्हें बार-बार समझाते हैं - बाप की याद से ही तुम्हारे जन्म-जन्मांतर के पाप भस्म होंगे.

- बाबा कहते हैं हमेशा तुम्हारी बुद्धि में तीन धाम याद रखो - शान्तिधाम जहाँ आत्मा ये रहती हैं, सुखधाम जहाँ के लिए तुम पुरुषार्थ कर रहे हो, दुखधाम शुरु होता है आधा-कल्प के बाद. बाबा आये ही हैं तुम्हारे लिए सुखधाम स्थापन करने.

- बाबा कहते है यह तो एक बाप की ही महिमा है कि वह ज्ञान का सागर, आनंद का सागर है. अभी तुम समझते हो की वही हमारा बाप बनकर पालना करता है, टीचर बनकर पढ़ाता है और सतगुरु बनकर श्रेष्ठ बनने की श्रीमत् देता है.

- बाबा कहते हैं जो मुझे जिस भावना से याद करते हैं, मैं उनकी भावना पुरी करता हूँ. साक्षात्कार कराता हूँ. लेकिन साक्षात्कार होने से तुम कर्मातित नहीं बनते हो. इसके लिए तो तुम्हें बाप की श्रेष्ठ श्रीमत् पर चल-कर बाप को याद करने का पुरुषार्थ करना होता है. बाप को बड़े प्यार से याद करना होता हैं. एक बाप की ही याद में लगन-मगन अवस्था बनानी होती है.

- बाबा कहते है अब तुम जानते हो कि तुम्हारी आत्मा पवित्र बनने बिगर पवित्र दुनिया, सतयुग में जा न सके. शिवबाबा को ही पतित पावन कहा जाता है. वह आते ही है तुम्हें समझाने. उनकी याद से ही तुम्हारी आत्मा फिर से पावन बन जाती हैं. तुम ही पावन दुनिया के मालिक बनते हो.

- बाबा ने कहा, यह मेरा दिव्य अलौकिक जन्म हैं. मुझे भी तुम्हें यह ज्ञान देने के लिए यह प्रकृति (शरीर) का सहारा लेना पड़ता हैं. मैं इस ब्रह्मा तन में प्रवेश करता हूँ. यह मेरा तन भी मुकरर हैं. यह बड़ा वन्डरफूल ड्रामा बना हुआ हैं.

- बाबा ने कहा, तुम तो शिव-शक्तियाँ हो ना. तुम ही अभी सर्व-शक्तिमान शिवबाबा से शक्ति लेते हो, पतित से पावन बनते हो. बाप ही तुम्हें सिम्पल राय देते है - बच्चे, तुम जब परमधाम से आये थे तब सतोप्रधान थे, अब तमोप्रधान बने हो. एक बाप की याद से ही फिर से तुम पतित से पावन सतोप्रधान बन जायेंगे.

ॐ शांति.